तृतीय अध्याय

हिन्दी कहानियों में आधुनिकता

कहानी कहने और सुनने की परंपरा उतनी ही प्राचीन है जितनी कि मनुष्य की भाषा । लेकिन जिसे आज हम कहानी कहते हैं, उसका जन्म आधुनिक काल में ही हुआ है । वैसे कहानी का पूर्वरूप हमें वेद, उपनिषाद, पंचतंत्र, हितोपदेश, बौध्द जातककथाओं में मिलता है । लेकिन साहित्य रचना प्राचीनकाल में प्राय: पद्य में ही होती थी और गद्य का विकास हर भाषा के साहित्य में प्राय: बाद में ही हुआ है ।

आधुनिक युग का प्रारंभ सन १९२७ में हुआ । सन १९३० से सन १९३७ तक पुरानी और नई दोनों प्रकार की कहानियाँ चलती रही ।इसे संक्रमणकाल कहा जा सकता है । पुरानी परंपरावालों पर आदर्शवाद का प्रभाव है तो नई कहानियाँ लिखनेवालों पर यौनवाद, यथार्थवाद, दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद, मार्क्सवाद की विचारधाराओं का प्रभाव रहा है । हिंदी में यह मार्क्सवाद प्रगतिवाद कहलाता है । प्रगतिशील कलाकारों में यशपाल, रांगेय राघव, अमृतलाल नागर ,नागार्जुन प्रमुख हैं । यशपाल ने शोषक शोषित समस्या को अपनी कहानियों में मुखरित किया है । विचार प्रधान कहानी लेखकों में सियारामशरण गुप्त , चंद्रकिरण सौनरिक्सा, विष्णुप्रभाकर आदि प्रमुख हैं । कमलेश्वर, मोहन राकेश, राजेंद्र यादव आदि ने विचारोत्तेजक कहानियाँ लिखी । इलाचंद्र जोशी ,

अज्ञेय, जैनेन्द्रकुमार मनोवैज्ञानिक कहानीकार हैं । अन्य कहानीकारों में अश्क, मोहनलाल महतो, कमलकांत वर्मा, सत्यवती, कमलादेवी चौधरी आदि प्रमुख हैं । आज की समय की कमी की परिस्थिति में कहानी लेखकों की तादात बढ़ रही है ।

हिन्दी कहानियों में आधुनिकता --

आधुनिकता आधुनिक युग की ही देन हैं । पुराने और नये का अंतर वैचारिक दृष्टिकोण के आधारपर ही किया जा सकता हैं । नवीनता की शुरुआत ही पुरातन चेतना का अवसान बिंदु हैं । द्वितीय महायुध्द के बाद सामाजिक संबंधों का टूटना, परिवार का विघटन, यांत्रिकता, राजनीतिक भ्रष्टाचार और मनुष्य के बीच फैले असंतोष ने नई कविता को जन्म दिया । नई कविता के माध्यम से ही आधुनिकता का दौर हिन्दी कहानी में आया । आधुनिकता की दृष्टि से ही कहानी में परिवर्तन आया और परम्परागत कहानी का ढाँचा टूट गया । घटनाओं का वाग्जाल, भाषा, परिवेश, पात्र, बिम्ब और संकेत बदल गये । यह कहानी सीधे जीवन से जुड़ गयी । आधुनिकता कीप्रक्रिया में लिखी गई कहानियों में स्वानुभूति की अभिव्यक्ति की सच्चाई, भोगे हुए क्षण को लिखने की बाध्यता, शाश्वत रूप से नवीनता की प्रक्रिया और सम्बन्धों की तलाश की संवेदना देखने को मिलती हैं[१] । लेखक अपने अनुभव की सच्चाई और भोगे हुए यथार्थ को लिखने को विवश हैं । शाश्वत रूप से नवीनता और सम्बन्धों की तलाश देखी जा सकती हैं ।

आधुनिकता की दृष्टि से हिंदी कहानी की शुरुआत प्रेमचंद की 'पुस की रात' (१९३४) और 'कफन' (१९३६) से मानते हैं । इन दो कहानियों में प्रेमचंद ने अपनी कहानी परम्परा को तोड़ा हैं और आधुनिकता की चुनौती को स्विकारा हैं । 'कफन' में घीसु और माधव का जीवन आर्थिक अभाव में चल रहा हैं । भुने हुए आलु उसका बाप खा जायेगा इसी कारण माधव अपनी बिमारी में तड़पती पत्नी को देखने घर के अंदर नहीं जाता । अपने बाप से कहता हैं कि अंदर

---

१ आधुनिकता और मोहन राकेश - डॉ.ऊर्मिला मिश्र - पृ.३४ ।

जाने से डर लगता है क्योंकि चुडैल फिसाद करेगी । `पुस की रात` में मुन्नी के पूछने पर हल्कू के पेट में दरद उठा था इसीलिए खेत की रखवाली नहीं कर पाया यह बहाना बनाता है । पर दोनों कहानी में वास्तव को छिपाने की कोशिश है । इसमें लेखक ने वास्तव को तटस्थता से पकड़ा है । कहानी के `अंत में घीसू और माधव का शराब के नशे में गिर पडना या हल्कू का यह जवाब देना कि अब उसे ठण्ड में सोना नहीं पडेगा इनकी स्थिति पर प्रश्नचिन्ह लगा देता है और इसमें आधुनिकता उजागर होने लगती है ।"[1]

`कफन` कहानी में परम्परावादी कहानी का ढाँचा कुछ हद तक टूट गया है । इस में तत्कालीन समय के यथार्थ परिवेश का चित्रण हुआ है । `कुछ हद तक पात्र की अन्वेषित दृष्टि की झलक मिलती है, पर इस कहानी में आधुनिकता की दृष्टि नहीं मिलती है । क्योंकि `कफन` कहानी के पात्र निष्क्रिय रूप से गहनतम मानवीय संकट को झेलने में सक्षम है, पर कहीं भी उनके मनमें अस्तित्व-संकट के प्रति उत्पन्न नहीं हुआ, न तो कहीं भी क्रान्ति की लहर उठती है । बाप-बेटे संशय की स्थिति में टकराते हैं । यहीं आधुनिकता की झलक मिलती है ।"[2]

आधुनिकता की शुरूआत प्रेमचंद से मानी भी जाय तो सही माने में सन १९५० से ही आधुनिक परिवेश की कहानियाँ आरंभ होती हैं ।

छठे दशक की कहानी में आधुनिकता : (१९५० - १९६०) --

अज्ञेय की कहानी `ग्रेंग्रीन` या `रोज` में परिवेश पहाड़ का है । इसमें परिवेश से कट जाने का ठंडा अहसास है । इसमें आधुनिकता का एक स्तर उजागर होता है । `गेंग्रीन` कहानी में डॉक्टर अपने पाँव में काटा चुभ जाने से उत्पन्न गेंग्रीन रोग का इलाज करता है । उनकी पत्नी मालती को भी एक तरह का काँटा चुभ गया है, लेकिन उसे इसका एहसास तक नहीं है । उसके अकेलेपन ,

---

१ आधुनिकता और हिंदी साहित्य - डॉ.इन्द्रनाथ मदान - पृ.७६ ।

२ आधुनिकता और मोहन राकेश - डॉ.उर्मिला मिश्र - पृ.३५ ।

बेगानेपन में आधुनिकता का बोध आँका जा सकता है ।

सुश्री उषा प्रियंवदा की कहानी `वापसी ` में गजाधर बाबू की विडम्बना की स्थिति है, जो आधुनिकता को लिये हुए है । बाबू गजाधर के रिटायर होने की वापसी पर इनका घर में मेहमान बन कर रह जाना इस कहानी में बाबू गजाधर के अकेलेपन को लेकर आधुनिकता देखी गयी है ।

निर्मल वर्मा की कहानी `परिंदे ` में मनुष्य की अनिश्चित नियति में आधुनिकता है । तो` डेढ इंच ऊपर ` में अकेलेपन और सुनेपन में आधुनिकता की संवेदना है ।

मोहन राकेश की कहानी` मिस पाल ` में परिवेश से कट जाने का बोध है । मिस पाल नगर परिवेश से छुटकारा पाने के लिए पहाड पर चित्र-कला में जीवन व्यतित करना चाहती है । पर वहाँ वह और भी अकेली पड जाती है । ` पाँचवे माले का फ्लैट ` में कथानायक महानगरी परिवेश में भी अकेला पड़ जाता है इसमें आधुनिकता बोध उजागर होने लगता है ।

राजेन्द्र यादव की कहानी में आदमी तनाव की स्थिति में है जिसके मूल में आधुनिकता की चुनौती है । वह चाहे` प्रतीक्षा ` या ` ढोल ` हो जिसमें कथा - नायक ढोल पहनकर महानगर के परिवेश का सामना करता है । इसमें आधुनिकता नगर बोध से जुड़ जाती है ।

कमलेश्वर की कहानियाँ देशगत आयाम की आधुनिकता को लिये हुए है । वह चाहे` खोयी हुयी दिशाएँ`, या` रुकी हुई घडी` हो ,` दुख के रास्ते ` हो, इसमें कमलेश्वर अपनी नित नयी बात से आधुनिकता को प्रक्रिया के तौर पर स्वीकारते है । ` या कुछ और ` का नायक महानगर के जड़ वातावरण में रहता है । उसके पास बहुत कुछ है, लेकिन फिर भी उसके जीवन में खालीपन है ।` भीतरी खालीपन का बोध है, इसमें आधुनिकता बोध उजागर होता है ।[१]

---

१ आधुनिकता और सृजनात्मक साहित्य - डॉ.इन्द्रनाथ मदान - पृ.९९ ।

रामकुमार की कहानी में भी आधुनिकता को आँका जा सकता है । उनकी कहानी `जानीन` में अतीत से छुटकारा पाने का तनाव दिखाई देता है । कथा नायिका परिवेश से कट चुकी है, अपने अतीत से वह छुटकारा पाने की छटपटाहट में है । राजकुमार की कहानी में आधुनिकता गहरे स्तर पर नगर-बोध से जुड जाती है ।

कृष्ण बलदेव वैद की कहानियों में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से, व्यक्ति अपने परिवेश से इतना कट गया है कि वह केवल मैं, वह और तुम हो गया है । इनकी कहानी `दूसरे किनारे से` में भीतरी अन्तर्द्वन्द्व को व्यक्त करने की कोशिश की है ।इनकी कहानियों में आधुनिकता से इंकार नहीं किया जा सकता ।

अमरकांत की कहानी `दोपहर का भोजन` में यथार्थ चित्रण हुआ है । कहानी में दारुण, आर्थिक स्थिति है और सभी उससे मुंह चुराते हैं, सहते हैं और भीतर-ही-भीतर पीड़ित हो उठते हैं । यहाँ पर आधुनिकता संकेत दे जाती है ।

मन्नू भंडारी की कहानी `त्रिशंकु` में आधुनिकता और परम्परागत संस्कारों का द्वन्द्व अभिव्यक्त किया गया है । `यही सच है` की नायिका दो प्रियकरों में,सही कौन ? इस मन:स्थिति में है । यहाँ पर आधुनिकता अन्तर्द्वन्द्व की स्थिति में उजागर होती है ।

धर्मवीर भारती की कहानी में भी आधुनिकता को खोजा और पाया गया है । आलोचकों के अनुसार, रचना की आधुनिकता इनकी कहानी `बन्द गली का आखिरी मकान` में देखी जा सकती है ।

गजानन मुक्तिबोध के `विपात्र` और `ब्रह्मराक्षस का शिष्य,` कहानियों में एक बुध्दिजीवी और एक कलाकार के तनाव, बेचैनी,छटपटाहट के माध्यम से आधुनिकता को एक ऐसा धरातल स्वीकारते हैं, जो है और जो हो नहीं पा रहा के बीच तनाव की स्थिति का है ।

भीष्म साहनी की `मौकापरस्ती` में राजनीतिक नेताओं के पाखंड और धूर्तता को बड़ी बेबाकी और क्रूरता से उजागर किया गया है ।

शेखर जोशी की कहानी 'मेंटल' में व्यवस्था तंत्र में पड़े आदमी की दशा, प्रतिरोध की शक्ति और व्यवस्था द्वारा उसे पागल करार देना, स्वाभाविकता से व्यक्त किया गया है।

इनके अलावा भी और बहुत से कहानीकार हैं जिन्होंने आधुनिकता की चुनौती को स्वीकारा है। 'स्वतंत्रता के बाद उभरे युग-सन्दर्भों, मानव-संबंधों, यथार्थ-स्थितियों और मूल्य-संकटों को समझाने की गहरी बेचैनी इन कहानियों में मिलेगी। .... उनमें सामाजिक सच्चाइयों को तीखेपन के साथ अभिव्यक्त करने और इस प्रकार, आधुनिकता की चुनौतियों का सामना करने'[1] का रचनात्मक सामर्थ्य पैदा हो गया है।

सातवें दशक की कहानी में आधुनिकता : (१९६०-१९७०) --

"आधुनिकता का बोध वास्तव के बारे में लेखक या इंगित लेखक की दृष्टि में होता है जो पात्रों को नाम भी दे सकता है और नामहीन भी बना सकता है, नाम देकर भी नामहीन बना सकता है। डॉ.अवस्थी ने जिन कहानीकारों के नाम गिनवाये हैं या जिन कहानियों की सूची दी है उनमें आधुनिकता के बोध को खोजा और पाया गया है और यह कहानी के नये मोड का या कहानी में आधुनिकता के नये दौर का परिचय देता है।"[2]

काशीनाथ सिंह की कहानी 'सुख' में आत्म-निर्वासन की त्रासदी उभरती है। भोला बाबू के जीवन की यांत्रिकता, जड़ता और आत्मनिर्वासन में आधुनिकता प्रकट होती है।

महेन्द्र भल्ला की कहानी 'एक दस्तावेज' में पाठक की संवेदना को झटका देनेवाला कथानक है, जिसका आज पाठक आदी हो गया है। 'अगर वह मेरी पत्नी

---

१ आधुनिकता के संदर्भ में हिंदी कहानी - डॉ.नरेन्द्र मोहन - पृ.४४।

२ आधुनिकता और सृजनात्मक साहित्य - डॉ.इन्द्रनाथ मदान -पृ.११६।

न होती , तो उसे चूम लेता या चूमने की इच्छा को दबाता और मजा लेता` । डॉ.इन्द्रनाथ मदान जो के अनुसार इस टुकडे में आधुनिकता के बोध को खोजा और पाया गया है ।

ज्ञानरंजन की कहानी` फेंस के इधर और उधर ` से निकलकर अब फेंस के उधर चली गयी है, याने पुरातनता से निकलकर आधुनिकता में चली गयी है । जहाँ नगरीकरण की प्रक्रिया तेजी से चल रही है । इनकी कहानी` रचना प्रक्रिया` में आधुनिकता और नगर बोध जुड गये है ।

रवीन्द्र कालिया में भी नगर-बोध से आधुनिकता जुड़ गयी है । इनकी कहानियाँ ` बडे शहर का आदमी`,` अकहानी`,` क ख ग`,` मौत` या ` काला रजिस्टर ` में जीवन-बोध और अन्त बोध आधुनिकता की प्रक्रिया का परिणाम है ।

प्रयाग शुक्ल की कहानी` आदमी` में कथा नायक वह को लगता है कि बिना काम किये चल सकता है । वह यात्रा कर रहा है जिसका अन्त नहीं है । परिवेश से वह कटा हुआ आदमी है । वह प्लेट फॉर्म पर बैठा गाडी के आने के इंतजार में खालीपन महसूस करता है । इसमें अजनबीपन,अकेलेपन का बोध आधुनिकता को लिये हुए है ।

गिरिराज किशोर की कहानी` पहचान ` में साइकिलों और कारों से बात शुरू होती है और इसके जो संकेत निकलते है, उनमें आधुनिकता देखी जा सकती है ।

गंगाप्रसाद विमल की ` शहर में ` कहानी का डॉक्टर, निश्चय नहीं कर पा रहा है कि वह कहाँ जायेगा । इस अन्त-बोध में आधुनिकता की प्रक्रिया देखी जा सकती है ।

ममता कालिया की कहानियों में रिश्ते और सम्बन्ध टूट रहे है, लेकिन इनकी खोज या तलाश नहीं है ।` बीमारी ` कहानी में आधुनिकता का बोध रिश्तों के तडक जाने में उजागर होता है ।

विजय मोहन सिंह की कहानी` कवि ` का प्रारम्भ ही अन्तर्विरोध से हुआ है जिससे आधुनिक भावबोध उभरकर आया है ।

दूधनाथ सिंह की कहानियों में जटिलता की स्थिति में आधुनिकता मिलती हैं । इनकी अधिकांश कहानियाँ संवाद विहीन तथा उदासीन स्थिति से भरी हैं ।

सुदर्शन चोपडा के कहानी-संकलन ` सडक दुर्घटना ` की अधिकांश कहानियाँ नगर बोध से जुड़ी हुई हैं ।

वेद राही की कहानी ` दरार `, ` हर रोज ` में संत्रास बोध हैं । इनकी कहानी में आधुनिकता की गंध भारतीय ही हैं ।

निरुपमा सेवती की कहानी ` भीड़ में तुम ` में खालीपन को भरने की कोशिश हैं । कथा-नायक ` मैं ` आवाजों के शोर में सुरक्षित हैं और शोर या भीड़ के स्वीकार में या वस्तुस्थिति के स्वीकार में आधुनिकता हैं ।

इनके अतिरिक्त भी अनेक कहानीकार हैं जिनकी कहानियों में इस दौर की आधुनिकता मिलती हैं । इस दौर की कहानियों की आधुनिकता पर अपना मत प्रकट करते हुए डॉ.नरेन्द्र मोहन कहते हैं, ` मानवीय सरोकार आठवें दशक की कहानी में अधिक गहरा और घना होता गया हैं तथा संघर्षशील और निर्णयात्मक मानसिकता से जुड़ता गया हैं । ` [१]

आठवें दशक की कहानी में आधुनिकता : (१९७०-१९८०) --

आठवें दशक की कहानी में आधुनिकता वास्तविक स्थिति को देखते हुए संघर्ष के बाहरी और भीतरी, वैयक्तिक और सामाजिक संदर्भ में अभिव्यक्त हुयी हैं ।

दीप्ति खंडेलवाल की कहानी का परिवेश सीमित हैं । ` क्षितिज `, ` वह ` और अन्य कहानियों में लेखिका ने पति-पत्नी के टूटते सम्बन्ध को कहानी का विषय बनाया हैं । ` वह ` के नायक वह का अस्तित्व बिखराने की कोशिश में आधुनिकता का बोध ओढा हुआ लगता हैं । वह निरंतर लड़ता रहता हैं, जीतना उसे आता नहीं, हार वह मानता नहीं ।

---

१ आधुनिकता के संदर्भ में हिंदी कहानी - डॉ.नरेन्द्र मोहन - पृ.५९ ।

जितेन्द्र भाटिया की तीन कहानियों में एक ही आदमी है -- ` एक आदमी का शहर `, ` डॉन क्विजोट की मौत ` , ` साजिश ` - यह आदमी शहर में अपने को अकेला और अजनबी महसूस करने लगता है । इन कहानियों में तनाव की स्थिति में आधुनिकता है ।

सतीश जमाली की कहानियों में आधुनिकता आर्थिक संकट, नगरीकरण का भयावह परिणाम, संवाद-विहिनता की स्थिति आदि में मिलती है । उनकी ` पुल ` , ` जीव `, ` प्रथम पुरुष ` कहानियाँ प्रमुख है ।

अरविंद सक्सेना की ` इत्यादि ` कहानी में महानगर की भीड़ है, अजनबीपन का बोध है जो आधुनिकता का परिणाम है । महानगर में हर आदमी गायब हो जाता है, इसमें जीना मरना मानो नहीं रखता ।

इब्राहिम शरीफ की कहानी ` बौध्दिक ` में नायक फालतू हो गया है । नायक के पास उसकी बेकारी के सवाल का जवाब नहीं है । इसका दोटूक जवाब माँ - बाप को गाली देने में दिया गया है - ` इन हरामजादों को किसने कहा था कि मुझे पढाएँ । ` कहानी के इस अन्तबोध में या प्रश्नचिन्ह में आधुनिकता के बोध को आँका जा सकता है ।

मधुकर सिंह की कहानी ` का पुरुष ` मे पीटर और दीपा के विवाह के माध्यम से रंग-भेद का सवाल तथा का पुरुषों के रूप का संकेत किया है । हबशी में विजातीयता का बोध उभरता है और अन्त में व्यंग्यबोध और दोनों में आधुनिकता का बोध उजागर होता है ।

बदीउज्जमाँ की कहानी ` दुर्ग ` में फैंटेसी के माध्यम से राजनीतिक व्यंग्य को मुखर किया है । राजनीतिक अव्यवस्था तंत्र में आधुनिकता को देखा गया है ।

कामतानाथ की ` पूर्वार्ध्द ` का नायक एक कारखाने के ऑफिस में काम करता है । ऑफिस का काम तथा घर की देखभाल में वह उलझा जाता है । घर में माँ की हालत खराब होती जा रही है और बेटा बिगड़ता जा रहा है, खाना भी

हराम हो रहा है । नायक अपने परिवार से निकलकर बाहर के परिवेश से जुडने की यातना में है और इसयातना में आधुनिकता का बोध इंगित होने लगता है ।

बल्लभ सिध्दार्थ की कहानी `बन्द दरवाजे ` में आधुनिकता अधिक गहरे में है । कहानी की ममी की आँखों में कोई-न-कोई प्रतीक्षा दिखाई देती है । इस प्रतीक्षा में ममी रीत चुकी है और स्वयं के लिए उसके पास कुछ भी नहीं है ।

सुरेन्द्र तिवारी की `वार्ड नम्बर टू `, स्वदेश दीपक की `शहर आपका स्वागत करता है`, सिध्देश की `विदूषाक नम्बर दो` , अशोक अग्रवाल की `नारे और दूसरे `, सुदर्शन नारंग की `अन्तराल` दामोदर सदन की `आईना` यह कहानियाँ भी आधुनिकता की दृष्टि से उल्लेखनीय है ।

असगर वजाहत की कहानियाँ व्यवस्था में पडे हुए आदमी की क्षमता और संघर्ष के बोध में आधुनिकता लिये हुए है ।

कहानीकार और कहानियाँ इनके अलावा और भी है जिनमें आधुनिकता अपनी विविधता को लिए हुए है । आधुनिकता की विविधता कभी परिवेश से कट जाने के अकेलेपन में है तो कभी इससे जुडने की यातना में है । कभी मानव-स्थिति की असंगति और मानव-नियति की विसंगति में, तो कभी इससे उबरने के तनाव में और छटपटाहट में आधुनिकता देखी जा सकती है ।

-- निष्कर्ष ---

सही माने में सन १९५० से आधुनिकता की दृष्टि लेकर कहानियाँ लिखना आरंभ हुआ । क्योंकि आजादी के बाद नयी स्थितियाँ उभर आयी जिनका मानव-जीवन के हर हिस्से पर प्रभाव दिखाई देने लगा । परिणामत: जीवन से जुड़ी कहानियाँ लिखने के कारणवश पुरातन दृष्टिकोण में बदलाव आ गया । हिंदी कहानी की आधुनिकता मानव केंद्रित है । वह निसंशय मनुष्य से जुड़ी है नकि किसी वाद या संप्रदाय से । कहानी की आधुनिकता सामाजिक, वैयक्तिक, धार्मिक,आर्थिक,

राजनीतिक आदि संदर्भों से जुड़ी हुयी हैं । हर समय हर युग में आधुनिकता की प्रक्रिया चलती रहती हैं । क्योंकि मनुष्य और उसका परिवेश बदलता रहेगा और उसकी कहानी भी बदलती रहेगी । आधुनिकता की सही तस्वीर या तत्वों की खोज फिर कहानीकार करेगा, क्योंकि आधुनिकता निरंतर नये हो रहने की प्रक्रिया जो हैं ।